आजाद स्त्री

चंदा यादव

आजाद स्त्री कौन है?
क्या पहचान है इसकी?
डरी, सहमी, शांत
तो फिर ये आजाद कैसे?
कैसे उठाएगी आवाज ये?
कैसे अपना हक लेगी?
कैसे तोड़ेगी बेड़ियां ये
कैसे दुनियाँ नापेगी अपने कदमों से?
सवाल वही
एक आजाद स्त्री
कौन है?
क्या ये सिर्फ एक है या
हर एक स्त्री में होती हैं
एक आजाद स्त्री?
अरे!
कैसे हो सकती है हर एक स्त्री आजाद?
सब तो कैद में है
विचारों से, प्रभावों से और दबावों से
मैं कहती हूं
जो भी क्रांति में विश्वास रखती है
वो है आजाद स्त्री!
जो बाकी महिलाओं के लिए एक उदाहरण बनती है
वो है आजाद स्त्री!
जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अडिग रहती है
वो है आजाद स्त्री!
जो पुरुषवाद को चुनौती देती है
और बार बार पुरुषों को सोचने को मजबूर करती है
पर झुकती नहीं
वो है आजाद स्त्री।
जो लड़कर अपने हक लेती है तो है
वो है आजाद स्त्री।
जो कमजोर विचारधारा से अलग एक आवाज बनती है
वो है आजाद स्त्री।
जो दूसरी स्त्रियों को रास्ता दिखाने का जज्बा रखती है
वो है आजाद स्त्री।
आज जो स्त्री क्रांति चाहती है
वो है आजाद स्त्री।
जो इन शब्दों को समझ जाये
वो है आजाद स्त्री।

❐❐❐❐

* शोधार्थी
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।